भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Soybean Research
खंडवा रोड, इन्दौर–452001 (म.प्र.)
Khandwa Road, Indore-452001

फाइल नं. **F.No. : तिलहन/विचारमंथन बैठक** / प्रेस विज्ञप्ति / 2020 दिनांक **Date: 23.09.2020**

तिलहनी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने तथा खाद्य तेल में आत्मनिर्भरता लाने के उद्देश्य से तीन दिवसीय राष्ट्रीय तिलहन विचार मंथन बैठक एवं अनुसंधान–उद्योग–कृषक परिचर्चा का भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर में आज शुभारंभ हुआ जिसका आनलाईन माध्यम से संस्थान की वेबसाईट तथा यू–ट्यूब चैनल पर भी सीधा प्रसारण किया गया। इस बैठक के प्रथम तकनीकी सत्र ''तिलहनी फसलों के अनुसंधान की चुनौतियाँ'' के अवसर पर देश के जाने माने कृषि वैज्ञानिक डॉ. चारूदत्त मायी (भूतपूर्व अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली) ने अध्यक्षता की तथा डॉ. एस.के. शर्मा (पूर्व कुलपति, सी.एस.के.एच.पी.के.वी.वी., पालमपुर) एवं डॉ. एस. राजेन्द्र प्रसाद (कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर) ने सह–अध्यक्षता की। इस बैठक में तिलहनी फसलों की तकनीकी विकास एवं प्रचार–प्रसार कार्यक्रमों से जुड़े विभिन्न राज्यों के 200 से अधिक वैज्ञानिक / उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में भा.कृ.अनु.प. – भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने तकनीकी सत्र के अध्यक्ष, सह–अध्यक्ष सहित विभिन्न क्षेत्रों के सभी उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं इस तीन दिवसीय बैठक के आयोजन से तिलहनी फसलों के उत्पादन तथा खाद्य तेल में आत्मनिर्भरता लाने हेतु देश में किये जा रहे अनुसंधान कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किये जा रहे प्रयासों से अवगत किया।

इस तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. सी.डी. मायी द्वारा इस अवसर पर देश के तिलहनी फसलों के उत्पादन परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए देश की खाद्य तेल आवश्यकता पूर्ति में आत्मनिर्भरता लाने हेतु कई विधाओं को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने विगत कुछ वर्षो में देश के कुल तिलहनी फसलों के क्षेत्र में हो रही कमी पर चिंता जताते हुए कई समस्याएँ जैसे बाजार में बिकने वाले तिलहनी फसलों के नकली बीज की समस्या के निवारण हेतु संबंधित विभागों के प्रयासों की आवश्यकता दर्शायी। साथ ही उन्होंने खेद व्यक्त किया कि हमारे देश के किसान नॉन जी.एम.ओ. तिलहनी फसलों का उत्पादन करते है लेकिन देश में बढ़ रही जनसंख्या के लिए आवश्यकता पूर्ति हेतु हमें जी.एम.ओ. युक्त खाद्य तेल का आयात करना पड़ता है। अतः उन्होंने इस पूरे परिदृश्य में तिलहनी फसलों के उत्पादन, उत्पादकता तथा उनके विपणन बाबत संबंधित विभागों की नीतिगत प्रयासों पर जोर दिया। इस अवसर पर तकनीकी सत्र के सह अध्यक्ष डॉ. एस. राजेन्द्र प्रसाद ने तिलहनी फसलों के गुणवत्ता पूर्ण बीजोत्पादन कार्यक्रम संबंधी देश में किये जा रहे प्रयासों पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी। जबकि डॉ. आर.के. अरोरा (मुख्य कार्यपालन अधिकारी, टिअरा एग्रो बायोटेक) द्वारा राई / सरसों फसल के उत्पादन में आ रही बाधाओं को दूर करने हेतु रणनीतियों पर अपनी प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अतर्गत देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत अनुसंधान संस्थान जैसे भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़, राई एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, भारतीय आईलपाम अनुसंधान संस्थान, पेडावेगी, तथा इन्दौर स्थित भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान आदि के निदेशकों ने अपनी–अपनी फसलों से संबंधित वर्तमान में चल रहे अनुसंधान कार्यक्रम, बाधाएँ / चुनौतियों पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से नवोन्मेषी अनुसंधान कार्यक्रम जैसे मोलीक्यूलर तकनीकी का उपयोग करते हुए उत्पादन बढ़ाने के प्रयासों की जानकारी दी। इस अवसर पर आनलाईन झूम एप्प के माध्यम से विभिन्न प्रतिभागियों से प्राप्त टिप्पणियों का भी संज्ञान लेकर भविष्य में तिलहनी फसलों से संबंधित किये जाने वाले अनुसंधान / विकास कार्यक्रमों में समावेश किये जाने की आवश्यकता दर्शायी।

इस तकनीकी सत्र में विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों संबंधी प्रस्तुतीकरण के पश्चात् डॉ. एस.के. शर्मा, सह–अध्यक्ष ने देश में तिलहनी फसलों के उत्पादन में वृद्धि लाने हेतु क्षेत्रफल बढ़ाने तथा प्रति इकाई उत्पादकता बढ़ाने की रणनीति पर जोर दिया। तत्पश्चात् डॉ. सी.डी. मायी, अध्यक्ष ने भविष्य में जी.एम. से संबंधित चुनौती के लिए पूर्व तैयारी के रूप में जी.एम. तिलहनी फसलों पर आधुनिक अनुसंधान किये जाने की आवश्यकता बाबत अवगत कराया। साथ ही उन्होंने गुणवत्ता में अधिक समय तक खाद्य तेल की सुरक्षितता पर अनुसंधान हेतु तिलहनी फसलों में ओलिक अम्ल की मात्रा बढ़ाने का आव्हान किया।

इस तकनीकी सत्र के आयोजन में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान अनुसंधान के डॉ. अनीता रानी तथा डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने अपनी भूमिका निभाई तथा डॉ. संजय गुप्ता ने उपस्थितों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

The three day National Oilseed Meet-cum-ñResearch-Industry-Farmer Interfaceò started today at the city based ICAR-Indian Institute of Soybean Research using online/virtual mode (zoom platform) and also through live coverage on institute Facebook page and Youtube channel. The first technical was conducted today on the important issue of ñChallenges of Research on Oilseed Cropsò chaired by Dr. C.D. Mayee, an eminent agricultural scientist and former chairman of Agricultural Scientist Recruitment Board, New Delhi and Co-chaired by Dr. S.K. Sharma, (Ex Vice Chancellar of CSKHPKV, Palampur) and Dr. S. Rajendra Prasad (Vice Chancellor of University of Agricultural Sciences, Bangaluru). The meet was attended by more than 200 delegates comprising those involved in development and dissemination of technologies related to major oilseed crops including representatives of the oilseed based industry houses. At the outset, Dr Nita Khandekar, Director (ICAR-IISR Indore) welcomed the dignitaries including Chairman, Co-chairman, Directors of other Oilseed base ICAR Institutes located in different part of the country and other participants. She also appraised the house regarding efforts of Indian Council of Agricultural Research towards increasing the productivity of oilseeds and self-sufficiency in vegetable oil of the country.

In his brief address, Dr. C.D. Mayee presented the overall scenario of edible oil economy of the country and outlined different ways to become self sufficient ñatmanirbharò in edible oil. He also showed his concern for overall reduction in the area of oilseeds grown in the country during recent past. The availability of spurious seed is another problem needed to be immediately addressed. The concern was shown toward the fact that the country is producing oilseed crops free from GMO but are compelled to import the GM soybean oil in order to meet our domestic requirement. Therefore He emphasized on strengthening the research work to increase productivity coupled with policy support for production and marketing of oilseeds and edible oil produced in the country. The co-Chairman of the session Dr S Rajendra Prasad, Vice Chancellor of University of Agricultural Sciences Bangaluru also delivered his talk on Challenges of quality seed production and supply in oilseed crops. Whereas Dr. RK Arora, CEO of Tierra Agro Biotech in his brief address which enlisted different constraints and strategies for enhancing the mustard productivity in the country.

On this occasion, the presentation on technological achievements and emerging challenges were made by the directors of different ICAR institutions working on oilseed crops like IIOR, Hyderabad, DGR, Junagarh, DRMR, Bharatpur, IIOPR Pedavegi and IISR, Indore which highlighted different crop specific challenges which needs to be addressed by innovative approaches including use of molecular tools in their research programmes. The technical also addressed the questions raised by other participants received through chat box of online zoom platform.

At the end of these presentations, Dr SK Sharma, Co-chairman of the session summarized the proceedings of the session by emphasizing the need to follow the strategies of increasing the area under oilseed and increasing the per unit productivity of these crops. The Chairman, Dr. CD Mayee has expressed that there is a need to promote advanced research on GMO oilseeds for future preparedness. The need was also expressed to increase oleic acid content in oilseeds for increased shelf life of vegetable oil used domestically in the country.

The session was conducted by Dr Anita and Dr. Manoj Kumar Srivastava, Principal Scientists of ICAR-IISR while the vote of thank was proposed by Dr Sanjay Gupta.

<table>
<tr><td>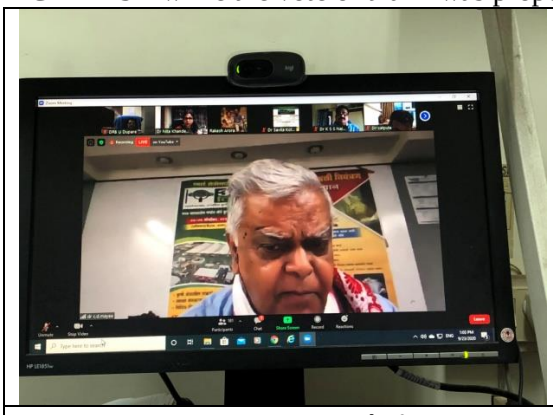</td><td>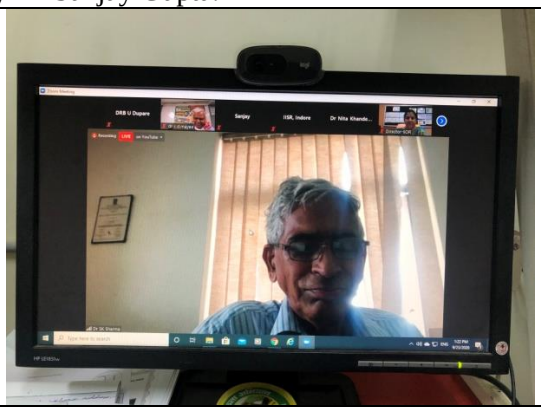</td></tr>
<tr><td>Dr. C.D. Mayee, Chairman</td><td>Dr. S.K. Sharma, Co-Chairman</td></tr>
<tr><td>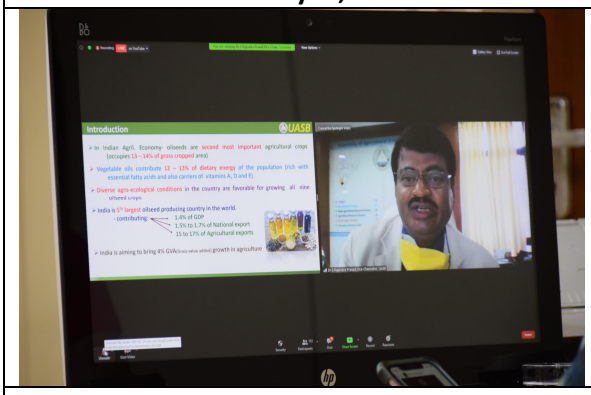
</td><td>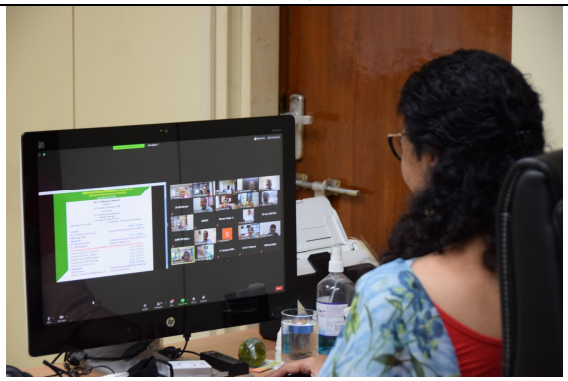</td></tr>
<tr><td>Dr. S. Rajendra Prasad, VC, UAS, Bengaluru</td><td>Dr. Nita Khandenkar, Director, IISR, Indore</td></tr>
<tr><td>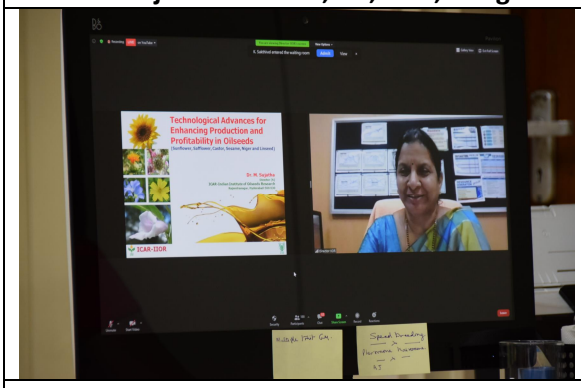
</td><td>
</td></tr>
<tr><td>Dr. M. Sujata, Director, IIOR, Hyderabad</td><td>Dr. Radhakrishnan, Director, DGR, Junagadh</td></tr>
</table>